भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-4194

उत्तर देने की तारीख-01/04/2026

शास्त्रीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्यिक कृतियाँ

4194 **श्री अशोकराव शंकरराव चव्हाण:**

क्या ***शिक्षा*** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने हाल ही में तमिल, उडिया, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और भारतीय सांकेतिक भाषा सहित शास्त्रीय भारतीय भाषाओं में 55 साहित्यिक कृतियाँ जारी की हैं;

(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और देश में भाषाई विविधता को बढ़ावा देने और शास्त्रीय भाषाओं के संरक्षण में इस पहल के उद्देश्य और महत्व क्या हैं;

(ग) क्या सरकार के पास भारतीय सांकेतिक भाषा सहित शास्त्रीय और कम प्रचलित भारतीय भाषाओं में साहित्य के सृजन, अनुवाद और प्रसार को प्रोत्साहित करने की कोई दीर्घकालिक योजना है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) क्या सरकार इस संबंध में कोई वित्तीय सहायता प्रदान करने और भविष्य की कार्ययोजना प्रस्तुत करने का विचार रखती है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री

(डॉ. सुकान्त मजूमदार)

(क) से (घ): सरकार ने समर्पित संस्थानों और शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से शास्त्रीय भाषाओं और अन्य भारतीय भाषाओं के संरक्षण, प्रचार और विकास के लिए कई पहलें की हैं। केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), मैसूरू शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक अधीनस्थ कार्यालय है, जो सभी भारतीय भाषाओं के अनुसंधान, प्रलेखन, प्रचार-प्रसार, शिक्षण, सुरक्षा और संरक्षण का कार्य करता है। केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान (सीआईसीटी), चेन्नई, शिक्षा मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन है, जो शास्त्रीय तमिल के शोध, संरक्षण और प्रसार से संबंधित गतिविधियाँ संचालित करता है।

सरकार ने हाल ही में 55 साहित्यिक कृतियाँ जारी की हैं जिनमें भारतीय शास्त्रीय भाषाओं में अनुवाद, शोध और प्रकाशन शामिल हैं। इन 55 साहित्यिक कृतियों में से, 41 साहित्यिक खंड शास्त्रीय कन्नड़ उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीके), शास्त्रीय तेलुगु उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीटी), शास्त्रीय मलयालम उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीएम) और शास्त्रीय उड़िया उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीओ) द्वारा विकसित किए गए हैं, जो सीआईआईएल, मैसूरू के तत्वाधान में कार्य कर रहे हैं; सीआईसीटी द्वारा 13 साहित्यिक खंड और तिरुक्कुरल की एक 45-एपिसोड वाली सांकेतिक भाषा व्याख्या श्रृंखला विकसित की गई है। इन साहित्यिक कृतियों का उद्देश्य प्राचीन शास्त्रों, दार्शनिक विचारों, वैज्ञानिक ज्ञान, साहित्यिक विरासत और सामाजिक विमर्श के समृद्ध संग्रह को भाषाई सीमाओं से परे जाकर सभी भारतीय भाषाओं, साथ ही समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाना है।

इसके अतिरिक्त, सीआईआईएल क्रमशः "लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण" तथा "भारतीय भाषाओं के लिए भाषाई डेटा कंसोर्टियम" (एलडीसी-आईएल) योजना के माध्यम से अल्प-ज्ञात भाषाओं और सांकेतिक भाषाओं के प्रसार और विकास के लिए भी कार्य करता है।

विगत कई वर्षों से नियमित रूप से सेमिनारों और कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, जूनियर रिसर्च फेलोशिप, पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप, अनुवाद परियोजनाओं तथा शास्त्रीय भाषाओं में प्रकाशन संबंधी गतिविधियों जैसी विभिन्न पहलों के लिए वित्तीय सहायता दी जा रही है। वर्ष 2024-25 में तमिल, कन्नड़, उड़िया, मलयालम, तेलुगु के लिए आवंटित निधियों का ब्यौरा इस प्रकार है:

वर्ष	आवंटित निधि (रु. लाख में)				
	तमिल	कन्नड़	उड़िया	मलयालम	तेलुगु
2024-25	1430.00	86.00	86.00	86.00	86.00

******